RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल.-011/2021-23

ओ३म्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

200 वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

वर्ष: 49, अंक : 51 एक प्रति: 2.00 रुपये
कुल पृष्ठ : 8
रविवार 19 मार्च , 2023
विक्रमी सम्वत् 2079, सृष्टि सम्वत् 1960853123
दयानन्दाब्द : 199 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–49, अंक : 51, 16-19 मार्च 2023 तदनुसार 6 चैत्र , सम्वत् 2079 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आर्य समाज के सिद्धान्तों को क्रियान्वित करने की जरूरत

ले.-: श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं कुलाधिपति गुरुकुल कांगडी सम विश्वविद्यालय हरिद्वार

आर्य समाज की नींव के रूप में जिन नैतिक मूल्यों ने आर्य समाज को सुदृढ़ता प्रदान की है, आर्य समाज के कार्यों को गति प्रदान की है, उनके तीन विभाग किए जा सकते हैं- सिद्धान्त, संगठन और प्रचार। आर्य समाज ने पिछले 148 वर्षों में जितनी प्रगति की है, देश की स्वतन्त्रता में अपना महान योगदान दिया है, समाज सुधार के कार्यों को नई दिशा प्रदान की है, उसका सबसे बड़ा कारण था अपने सिद्धान्तों पर पूरी शक्ति और लग्न से चलने का प्रयास करना। दूसरा अपने सिद्धान्तों को क्रियान्वित करने के लिए एक संगठन का सशक्त आधार रखना और तीसरा अपनी विचारधारा का प्रचार प्रसार करना। परन्तु जब हम अपने पिछले इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं और आज की परिस्थितियों पर गम्भीरतापूर्वक चिन्तन करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि अब हमें बहुत कुछ बदलने की आवश्यकता है। 148 वर्ष पहले परिस्थितियां कुछ और थी, आज कुछ और है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जब आर्य समाज की स्थापना की थी उस समय देश में वह जागृति नहीं थी जो आज हम देख रहे हैं। उस समय इस्लाम और ईसाइयत का बहुत अधिक प्रचार था और देश में कोई ऐसी संस्था नहीं थी जो देशवासियों को इस्लाम और ईसाइयत के पंजे में फंसने से रोक सकती। देश में अंग्रेजों का शासन था। इसलिए ईसाइयत का बोलबाला था। राजशक्ति की आड़ में ईसाइयत का प्रचार हो रहा था। उससे पहले कई वर्षों तक मुसलमानों का शासन रहा। उस समय इस्लाम का प्रचार होता रहा। कई मुस्लिम बादशाहों ने तलवार के जोर से अपने धर्म का प्रचार किया था। इसका परिणाम यह हुआ कि इस देश की जनता इतनी भयभीत हो गई थी कि कोई भी इस्लाम और ईसाईयत के विरूद्ध बोलने का तैयार नहीं था। इस्लाम के विरूद्ध सबसे बड़ा विद्रोह गुरू तेग बहादुर जी ने किया था और उसके बाद एक बालक वीर हकीकत राय ने किया था। उनको उसका जो परिणाम भुगतना पड़ा वह भी हमारे सामने है।

जिस समय युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कार्यक्षेत्र में उतरे, उस समय हमारे देश की जनता इतनी दब चुकी थी कि कोई बोलने का नाम नहीं लेता था। पहली बार महर्षि दयानन्द ने विद्रोह की आवाज उठाई और उसने सारी हिन्दू जाति को हिलाकर रख दिया। उन्होंने अपने देशवासियों को याद दिलाया कि वे क्या थे और क्या बन गए? उन्होंने हमें केवल राजनैतिक स्वतन्त्रता का मार्ग ही नहीं दिखाया बल्कि धार्मिक और सामाजिक उत्थान के लिए भी तैयार किया। उस समय की जनता के लिए विशेष कर बुद्धिजीवियों के लिए यह एक नई स्थिति थी। उनमें आत्मविश्वास पैदा हो गया और वे एक बार फिर अपने पैरों पर खड़े होने के लिए तैयार हो गए। यही कारण था कि जब महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की तो वह बहुत जल्दी ही सारे देश में इसका प्रचार हो गया। लोग आर्य समाज की तरफ आकर्षित होने लगे। आर्य समाज के कार्यों से समाज को एक नई दिशा मिली और उन कार्यों की चमक से सारा देश प्रकाशित होने लगा।

लेकिन आज परिस्थितियां बदल गई हैं। आर्य समाज का नाम तो आज सारे देश में फैला हुआ है। शिक्षण संस्थाओं के रूप में डी.ए.वी. और आर्य शिक्षण संस्थाओं का पूरे देश में जाल फैला हुआ है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

नवसम्वत- नव वर्ष के शुभ अवसर पर

हार्दिक बधाई

नववर्ष-नवसम्वतसर 2080 चैत्र सुदी प्रतिपदा दिनांक 22 मार्च 2023 से आरम्भ हो रहा है। सृष्टि सम्वत् 1960853124 के शुभ अवसर पर तथा विक्रमी सम्वत् 2080 के शुभारम्भ पर हम आर्य मर्यादा के सभी पाठकों, आर्य समाजों व आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं, प्रिंसीपलों, अध्यापकों, प्राध्यापकों तथा सभी आर्य बन्धुओं व आर्य बहनों को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से, आर्य विद्या परिषद पंजाब की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं भेंट करते हैं व हार्दिक बधाई देते हैं।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

सुदर्शन कुमार शर्मा — प्रधान
प्रेम कुमार — महामंत्री
सुधीर कुमार शर्मा — कोषाध्यक्ष
अशोक परूथी एडवोकेट — रजिस्ट्रार

समस्त अधिकारी व अन्तरंग सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन,
चौक किशनपुरा जालन्धर

अथर्ववेद में पृथ्वी सूक्त

ले.-शिवनारायण उपाध्याय दादावाड़ी कोटा, (राजस्थान)

हम सब का आधार पृथ्वी है। हम सब इस पृथ्वी पर ही जन्म लेते हैं। इसी पर रहकर ही घुटनों के बल चलते चलते सीधे खड़े होकर चलना सीख जाते हैं। इसी पृथ्वी से उत्पन्न हुए खाद्य पदार्थों से हमारा भरण पोषण होता है। इसी की मिट्टी और पत्थरों द्वारा बनाएं गए बड़े बड़े भवनों में हम निवास करते हैं। इसी पर पाया जाने वाला वायु और जल हमें जीवित रखता है। हमारे सुख और दुख सभी की साक्षी यह पृथ्वी ही है। इस पर नाना प्रकार की जलवायु पाई जाती है। कहीं पर हरे भरे मैदान हैं तो तो कहीं पर बर्फ से ढके हुए बड़ी बड़ी पर्वत मालाएं हैं। कहीं अत्यंत सूखा रेत से भरा हुआ रेगिस्तान है तो कहीं पर सागर लहरा रहे हैं।

नाना प्रकार के खनिज पदार्थ भी हमें इस पृथ्वी के गर्भ से ही प्राप्त होते हैं। इसी पृथ्वी का जैसा अच्छा वर्णन अथर्ववेद अध्याय 12 सूक्त 1 में हुआ में है। वैसा वर्णन कही भी प्राप्त नहीं है। इस लेख में हम अथर्ववेद के आधार पर ही पृथ्वी का संक्षिप्त वर्णन करना चाह रहे हैं। वेद के पहले मंत्र में यह बताया गया है कि इस पृथ्वी को कौन धारण कर रहा है।

सत्यं वृहद्दमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्मयज्ञः पृथ्वींधारयान्ति।
सानो भूतत्य भव्यस्य पत्नुरूं लोकं पृथिवीनः कृणोतु।।
अथर्व. 12.1.1

पदार्थ-(वृहत्) बढ़ा हुआ (सत्यम्) सत्य कर्म (उग्रम्) तेज (ऋतम्) सत्य ज्ञान (दीक्षा) दीक्षा, आत्मनिग्रह (ब्रह्म) बृह्मचर्य (तपः) व्रत धारण और (यज्ञः) देवपूजा, संगतिकरण और दान (पृथिवीम्) पृथ्वी को (धारयान्ति) धारण करते हैं। (नः) हमारे (भूतस्य) व्यतीत हुए और (भव्यस्य) होने वाले समय की (पत्नीः) पालन करने वाली (सा पृथिवी) वह पृथ्वी (ऊरूम्) चौडा (लोकम्) स्थान (नः) हमारे लिये (कृणोतु) करे।

भावार्थ-भूत काल में, वर्तमान काल में और भविष्य काल में भी यह पृथ्वी ही हमारा पालन करती रही है और पालन करती रहेगी। यह पृथ्वी मनुष्यों के श्रेष्ठ कर्म, ज्ञान, आत्मनिग्रह, ब्रह्मचर्य, वृतमय जीवन अपने से बड़ों का सत्कार विभिन्न पदार्थों को अलग-अलग अनुपात में मिलाकर नए नए पदार्थ बनाने की विद्या और असमर्थ प्राणियों के भरण पोषण की भावना के कारण अपनी स्थिति बनाए हुए हैं। वही वास्तव में इसे धारण कर रहे हैं। पृथ्वी पर हमें कहीं नदी नाले कहीं समुद्र तो कहीं हरे भरे खेत दिखाई देते हैं।

यह सम्पूर्ण प्राणी जगत भी इसी पृथ्वी पर श्वास लेकर जीवित रहता है। हमें अपने जीवन का विकास भी इसी पृथ्वी पर करना है।

यस्यां समुद्र उत सिंधुरायो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्व पेये दधातु।।3।।

पदार्थ-(यस्याम्) जिस भूमि पर (समुद्र) समुद्र (उत) और (सिंधु) नदी और (आपः) जल धाराएं हैं। (यस्याम्) जिस पर (अन्नम्) अन्न और (कृष्टयः) खेतियां (संबभूवुः) उत्पन्न हुई है। (यस्याम्) जिस पर (इदम्) यह (प्राणत्) श्वास लेता हुआ और (एजत्) चलता हुआ जगत (जिन्वति) चलता है (सा भूमिः) वह भूमि (नः) हमें (पूर्वपेये) श्रेष्ठों से रक्षा योग्य पद पर (दधातु) ठहराए।

भावार्थ-जो मनुष्य समुद्र नदी कूप और वृष्टि के जल तथा खेती आदि से नाव जहाज आदि से अनेक प्रकार उपकार लेते है। वे सब मनुष्य जगत् को आनंद देकर श्रेष्ठ पद पाते हैं। पृथ्वी का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है जिसमें नाना प्रकार के खाद्य पदार्थ रेशे वाले पौधे उत्पन्न होते हैं। नाना पशु पक्षी भी इस पर श्वास लेते हुए विचरण करते रहते हैं।

यश्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
या विभर्तिबहुधा प्राणदेजत् सानो भूमि गोष्वप्यन्ने दधातु।।4।।

पदार्थ-(यस्याः पृथिव्याः) जिस पृथ्वी की (चतस्रः) चारों (प्रदिशः) बड़ी दिशाएं हैं (यस्याम्) जिसमें (अन्नम्) अन्न और (कृष्टयः) खेतियां (संबभुवुः) उत्पन्न हुई है। (या) जो (बहुधा) अनेक प्रकार से (प्राणत्) श्वास लेते हुए और (एजत्) चेष्टा करते हुए जगत् को (बिभर्ति) पोषण करती है, (सा भूमिः) वह भूमि (न) हमें (गोषु) गौओं में (अपि) और भी (अन्ने) अन्न में (दधातु) रखे।

इस पृथ्वी पर ही हमारे पूर्वजों ने बड़े बड़े काम किये है। इसी पृथ्वी पर देव और असुरों में युद्ध हुए है। देवताओं ने असुरों को पराजित किया है यह पृथ्वी ही हमें अन्न और तेज प्रदान करती है।

यस्या पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन्।
गवामश्वानां वयसमश्च विष्ठा वर्चः पृथिवी नो दधातु।।5।।

पदार्थ-(यस्याम्) जिस पृथ्वी पर (पूर्वे) पूर्वकाल में (पूर्वजनाः) हमारे पूर्वजों ने (विचक्रिरे) बढ़ कर कार्य किए हैं। (यस्याम्) जिस पर (देवाः) देवताओं ने (असुरान्) असुरों को (अभ्यवर्तमान्) हराया है। (गवाम्) गौओं (अश्वानाम्) घोड़ों (च) और (वयसः) अन्न की (विष्ठा) चौकी (स्थान) (पृथिवी) यह पृथ्वी (नः) हमको (भगम्) ऐश्वर्य और (वर्चः) तेज प्रदान करें।

अगले मंत्र में पृथ्वी के गुपावाचक नामों का वर्णन है।

विश्वम्भरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतो निवेशानी।
वपैश्नानरं बिभ्रती भूमिरग्निमिन्द्र ऋषभा द्रवियो नो दधातु।।6।।

पदार्थ-(विश्वम्भरा) सबको सहारा देने वाली (वसुधानी) धनों की रखने वाली (प्रतिष्ठा) दृढ़ आधार (हिरण्यकक्षाः) अपनी छाती में स्वर्ण रखने वाली (जगत्) गतिशील (उद्योगी) की (निवेशनी) सुख देने वाली (वेश्वानरम्) सब मनुष्यों की हितकारी (अग्निम्) अग्नि (समान प्रतापी मनुष्य) की (बिभ्रती) पोषण करने वाली (इन्द्रऋषभा) इन्द्र को प्रधान मानने वाली (भूमि) भूमि (द्रविणे) धन के बीच (नः) हमको (दधातु) रखे।

सृष्टि उत्पत्ति के समय पहले यह अत्यंत गरम थी और फिर बाद में वर्षा की अधिकता से सम्पूर्ण पृथ्वी समुद्र में डूबी हुई थी।

यार्णवेऽधि सलिलमग्र आसीद् यां मायाभिरन्वचरन मनीषिणः।
यस्याहृदयं परमेव्यो-मनत्सत्येनानृतममृतं पृथिव्याः।
सो नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातुत्तमे।।8।।

पदार्थ-(या) जो भूमि (अर्पवेअधि) जल से भरे समुद्र के अंदर (सलिलम्) जल (भाप) (अग्रे) पहले (आसीत्) थी (मनीषिणः) मननशील लोग (मायाभि) अपनी बुद्धियों से (याम् अन्वचरन्) जिस भूमि के पीछे पीछे चले हैं सेवा करते रहे हैं। (यस्याः पृथिव्याः) जिस पृथ्वी का (हृदय) भीतरी भाग (परमे) बहुत बड़े (व्योमन्) आकाश में (सत्येन) सत्य (अविनाशी परमात्मा) से (आवृतम्) ढका हुआ (अमृतम्) बिना मरा (सदा उपजाऊ) है। (साभूमिः) वह भूमि (नः) हमको (त्विषिम्) तेज और (बलम्) बल (उत्तमे) सबसे श्रेष्ठ (राष्ट्रे) राष्ट्र के बीच (दधातु) दान करे।

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवी न्योनमस्तु।
बभ्रूं कृष्णां रोहिणी विश्व रूपां ध्रुवां भूमिं पृथिवीमिन्द्रगुप्तम्।
अजीतोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठा पृथिवीमहम्।।11।।

पदार्थ-हे पृथ्वी। हमारे लिये तेरी पहाड़ियां हिमवान् पर्वत और तेरा वन भी मनभावन होवे। हे हमारा पोषण करने वाली कृषि योग्य उपजाऊ अनेक रूप वाली, दृढ़ स्वभाव वाली ऐश्वर्य शाली पुरूषों से रक्षा की गई पृथ्वी का बिना जीर्ण हुए बिना मारे गए ओर बिना घायल हुए मैं अधिष्ठाताः बन गया हूँ।

अगले मंत्र में पृथ्वी को माता ओर पुरूष को पुत्र के रूप में बताया गया है।

यत् ते मध्यं पृथिवी यच्च नभ्यं यास्त उर्जस्तन्वः संबभूवुः।
तासुनो देह्य भिनः पवस्व माता भूमिः पुत्रों अहं पृथिव्याः।।
पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु।।12।।

पदार्थ-हे पृथ्वी जो तेरा न्याय युक्त कर्म है और जो क्षत्रियों का हितकारी कर्म है और जो बलदायक पदार्थ (अन्नादि) तेरे शरीर से उत्पन्न हुए है। उन सब के मध्यम तू हमको रख। हमें सब ओर से शुद्ध कर। भूमि मेरी माता के समान है और भूमि पुत्र के समान हूँ। पृथ्वी को सींचने वाला मेघ पिता के समान है। वह भी हमें पूर्ण करे सभी औषधियां पृथ्वी पर ही उत्पन्न होती है यह उनकी माता के तुल्य है। बड़ी मनभावनी है।

हम इस पृथ्वी परनाना प्रकार से विचरण करें।

विश्वस्वं मातरमोषधीनां ध्रुवा भूमि पृथिवी धर्मणा धृतम्।
शिवा स्योनामनु चरेम विश्वहा।।17।।

पदार्थ-सभी वनस्पतियों को उत्पन्न करने वाली, औषधियों की माता के समान, दृढ़ आश्रयस्थल, धर्म से धारण की गई, कल्याणी, मनभावनी पृथ्वी के पीछे हम लोग अनेक प्रकार से चलें। जैसा कि पूर्व में कहा गया था पूर्व में पृथ्वी अत्यन्त गरम थी। आग का गोला थी। अभी भी इसका मध्य भाग अत्यन्त गरम है।

अग्निर्भूम्यामोषधीष्वग्निमापो बिभ्रत्यग्निरश्मसु।
अग्निरन्तः पुरूषेषु गोष्व-श्वेष्वग्नयः।।19।।

पदार्थ-(भूम्याम्) भूमि में (वर्तमान) (अग्निः) अग्नि (ताप) (औषधिषु) औषधियों अन्नादि में है। (अग्निम्) अग्नि को (आपः) जल (बिभ्रति) धारण करते हैं। (अग्निः) अग्नि (अश्मसु) पत्थरों में है। (अग्नि) अग्नि (पुरूषेषु अंतः) पुरूषों के भीतर है (अग्नयः) अग्नि (के तापि) (गौषु) गौओं में और

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

आर्य समाज स्थापना दिवस और हम

इस बार 22 मार्च 2023 को आर्य समाज स्थापना दिवस है। दूसरे शब्दों में कहें तो आर्य समाज की आयु अब 148 वर्ष की हो गई है। कहने की आवश्यकता नहीं कि आर्य समाज के इस जीवन काल में देश-विदेश में आर्य समाज का जितना प्रचार हुआ है उतना किसी धार्मिक संस्था का नहीं हुआ है। देश के प्रत्येक प्रान्त में छोटे-बड़े सभी नगरों में आर्य समाज की स्थापना हो चुकी है। आर्य समाज एवं डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं का फैलाव भी सम्पूर्ण भारतवर्ष में है। इस विशाल संगठन को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए आज हमें इसके स्थापना दिवस के अवसर पर कुछ विचार करना है और उसके अनुसार कार्य करने का संकल्प लेना है।

आर्य समाज वेदों का प्रचार-प्रसार करने की प्रमुख संस्था है। इसका मुख्य उद्देश्य वेद और सत्य सिद्धान्तों का प्रचार करना है। आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य का जीवन आर्य समाज की विचारधारा के अनुकूल होना चाहिए और इसके लिए उसे स्वाध्यायशील होना जरूरी है। आर्य समाज के आरम्भिक काल में आर्य समाज के सदस्य स्वाध्यायशील, विचारशील व वैदिक सिद्धान्तों पर चलने वाले हुआ करते थे। दुर्भाग्य से आज यह प्रचार भावना आर्य समाज के सदस्यों में कम हो रही है। हमारे साप्ताहिक सत्संग अपने तक ही सीमित हो गए हैं। दूसरे लोग तो क्या आर्य समाज के सदस्यों के बच्चे भी सत्संग में नहीं जाते । स्वाध्याय हमारे जीवन का अंग नहीं रहा। वेद और सत्यार्थ प्रकाश हमारे घरों में नहीं हैं। जब हम वेदों को, महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों को और अन्य साहित्य को स्वयं नहीं पढ़ेंगे तो दूसरों को पढ़ने-पढ़ाने की क्या प्रेरणा करेंगे। इसलिए आज हमें आर्य समाज के सिद्धान्तों को अपनाने पर बल देना चाहिए, वेदों का स्वाध्याय करना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म बताया है। आज हमें विचार करने की आवश्यकता है कि क्या हम उस परम धर्म का पालन कर रहे हैं?

आर्य समाज के सभी सिद्धान्त और नियम बुद्धिसंगत हैं अर्थात् तर्क तथा युक्ति के अनुकूल है किन्तु हमने उन्हें अपने जीवन में पूरी तरह से नहीं अपनाया। परिणामस्वरूप न हमारे सामाजिक जीवन में शक्ति है और न व्यक्तिगत जीवन में। आज का अशान्त मानव ऐसी धर्म सभा या संगठन की शरण में जाना चाहता है जो उसे आत्मिक शान्ति और मानसिक सुख प्रदान कर सके। इसके लिए आर्य समाज के लोगों को अपने जीवन को आदर्श के रूप में प्रस्तुत करना होगा। अपने जीवन में महर्षि दयानन्द के आदर्शों और सिद्धान्तों को पूर्ण रूप से अपनाना होगा। किसी भी संस्था की उन्नति इस बात पर निर्भर करती है कि उस संस्था के कार्यकर्ता संस्था के सिद्धान्तों का पालन करने वाले हैं या नहीं। आर्य समाज के सिद्धान्त बुद्धि सम्मत और तर्क की कसौटी पर खरे उतरने वाले हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के नियमों के रूप में हमें ऐसे सिद्धान्त दिए हैं जिनका पालन करने से सम्पूर्ण विश्व मानवता की ओर अग्रसर हो सकता है। यह नियम किसी व्यक्ति विशेष या सम्प्रदाय विशेष के लिए नहीं अपितु सम्पूर्ण संसार के लिए है। इसलिए आर्य समाज का लक्ष्य निर्धारित करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के छठे नियम में उसकी रूप रेखा प्रस्तुत की है कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। इस महान् उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमें अपने जीवन को शुद्ध बनाना होगा। हमारा प्रत्येक कार्य, व्यवहार आर्यत्व के अनुकूल होना चाहिए। हमारे उच्च व्यवहार, शुद्ध जीवन, आचार-विचार की पवित्रता के कारण ही दूसरे लोग हमारी ओर आकर्षित होंगे।

जिन महापुरूषों ने आर्य समाज के लिए तप और त्याग किया है उन महापुरूषों को हमें कभी नहीं भूलना चाहिए अपितु उनके जीवन एवं कार्यों से प्रेरणा लेकर आर्य समाज के कार्य को निरन्तर आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, गुरूदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम आदि आर्य समाज की विभूतियों पर हमें गौरव होना चाहिए। इन लोगों ने आर्य समाज के कार्यों के लिए अपना-अपना जीवन बलिदान दिया है और आर्य समाज को सींचने का कार्य किया है। इन महापुरूषों को तथा इनके कार्यों को हमें हमेशा याद रखना चाहिए।

आर्य समाज की उन्नति के लिए आज हमें जातिवाद और बिरादरीवाद से ऊपर उठकर कार्य करना होगा। आर्य समाज की स्थापना को हुए इतने वर्ष बीत जाने पर भी आज हम जातिवाद और बिरादरीवाद से ऊपर नहीं उठ पाए हैं। इसी कारण आर्य समाज के प्रचार और प्रसार का क्षेत्र सीमित हो गया है। पहले लोग अपनी जात बिरादरी को छोड़ कर आर्य समाज में आते थे तो यही उनकी जात और बिरादरी बन जाति थी परन्तु आज लोगों में वह भावना नहीं है। इस भावना के न होने के कारण आज भी समाज में जाति प्रथा के आधार पर आरक्षण की बात होती है और आरक्षण प्राप्त करने के लिए दंगे भड़काए जाते हैं। आर्य समाज सदैव जातिवाद से ऊपर उठकर संगच्छध्वं, सवदध्वं की भावना से कार्य करने का सन्देश देता है। इसलिए आज हमें इन बातों से ऊपर उठकर समाज की उन्नति के लिए कार्य करना है जहां पर जाति के आधार पर किसी से भेदभाव न हो। सभी मनुष्य समाज के अंग हैं उनमें जन्म के आधार पर कोई भी छोटा बड़ा नहीं है। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वर्णव्यवस्था पर बल दिया।

आर्य समाज ने अपनी संस्थाएं प्रचार के साधन के रूप में चलाई थी। आज संस्थाएं साधन न बनकर साध्य बन गई हैं। इसलिए आज आर्य समाज की संस्थाओं को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास करना चाहिए। वेद प्रचार के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए इन संस्थाओं का सदुपयोग होना चाहिए। आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए मिशनरी प्रचारकों को तैयार करना चाहिए। आर्य समाज में कार्यक्रमों की एक नई रूपरेखा तैयार करनी चाहिए और उस योजना के आधार पर कार्य करना चाहिए। आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर हम सभी विचार करें और सोचें कि हम आर्य समाज के कार्यों को किस प्रकार आगे बढ़ा सकते हैं। हमें स्वाध्याय पर बल देना चाहिए, नए लोगों को जोड़ने का प्रयास करना चाहिए, आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में अपने बच्चों को लेकर जाना चाहिए, आर्य समाज के सिद्धान्तों को अपनाने पर बल देना चाहिए, अपने आचरण खान-पान, व्यवहार को शुद्ध और पवित्र करना चाहिए। मेरी सम्मति में यदि हम इन बातों की ओर ध्यान दें और उन्हें क्रियान्वित करने का संकल्प लें तो आर्य समाज अपने कार्यक्षेत्र में और अधिक उन्नति कर सकता है।

प्रेम कुमार
संपादक एवं सभा महामन्त्री

समग्र क्रान्ति के प्रणेता महर्षि दयानन्द सरस्वती

ले.-डा. सत्यदेव 507-गोदावरी ब्लाक, अशोका सिटी कृष्णा नगर-मथुरा

भारत वर्ष के इतिहास में उन्नीसवीं शताब्दी को पुनर्जागरण काल माना गया है। इस युग के महापुरुषों ने अपने उदात्त व्यक्तित्व, उत्कृष्ट विचारधारा तथा प्रभावपूर्ण क्रिया-कलापों द्वारा जन-जन को नया मार्ग दिखाया। राजाराम मोहन राय, रामकृष्ण परमहंस, महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द के नाम इस श्रृंखला में लिए जाते हैं। इन महापुरुषों ने अपने व्यक्तित्व और विचार सम्पदा से मानव जाति का पथ प्रदर्शन किया। महर्षि दयानन्द की गणना ऐसे ही शलाधा पुरुषों में की जाती है। उनका व्यक्तित्व, कृतित्व, नेतृत्व अपने क्रान्तिकारी आभास के फलस्वरूप अपना विशिष्ट स्थान रखता है। दयानन्द का जन्म उस समय हुआ, जब भारत पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। उस समय पतन और पराजय की दुर्भाग्यपूर्ण बेला में सभी किंकर्तव्य-विमूढ़ थे। राजा-महाराजा भोग विलास में मस्त थे। पाखण्ड और अंधविश्वासों का जाल सर्वत्र फैला हुआ था। धर्म के नाम पर भोली-भाली जनता को ठगा जा रहा था। तंत्र-मंत्र, टोना-टोटका, भूत-प्रेत, डाकिनी-पिशाचनी का सर्वत्र अंधकारपूर्ण साम्राज्य था। ऐसे युग में महर्षि दयानन्द का जन्म फाल्गुन वदी दशमी संवत् १८८१ विं० को तदनुसार १२ फरवरी सन् १८२४ ई० को हुआ था। उनका निधन दि० ३० अक्टूबर, सन् १८८३ ई० को दीपावली के दिन अजमेर (राजस्थान) में कार्तिक मास की अमावस्या संवत् १९४० विक्रमी को हुआ था।

दयानन्द का जन्म उस युग में हुआ, जब भारतीय लोग पश्चिम की विद्या, बुद्धि, विज्ञान एवं तर्क युक्त चिन्तन के सम्पर्क में आकर यह नहीं समझ पा रहे थे कि इस नवचेतना को किस रूप में स्वीकार करें। पुनरुत्थान के अन्य ज्योतिर्धरों ने पश्चिमी शिक्षा, पाश्चात्य चिन्तन और पाश्चात्य विचारधाराओं से प्रेरणा ग्रहण की थी। महर्षि दयानन्द ऐसे परिवार में पले-बढ़े थे, जहां पर पाश्चात्य परिवेश का लेश मात्र भी नहीं था। उनके गुरुवर दण्डी स्वामी विरजानन्द ने पुरातन संस्कृत शास्त्रों की ही उन्हें शिक्षा दी थी। इस प्रकार भारतीय दर्शन, व्याकरण और योग में दीक्षित होकर भी दयानन्द ने अपने समय में सर्वथा प्रगतिशील और समयोचित, सामाजिक पुनरुत्थान में सक्षम कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

महर्षि दयानन्द ने कहा कि 'वेद के अध्ययन का अधिकार सबको है और वेद की आज्ञानुसार जीवन-यापन करने पर बल दिया, यह उनकी प्राथमिक विचारक्रान्ति थी। मूलतः, वे धार्मिक पुरुष थे, परन्तु उनका धर्म, पूजा पाठ अथवा कर्म काण्ड तक सीमित नहीं था। वे संकीर्णता की परिधि से बाहर के व्यक्तित्व थे। उन्होंने धर्म को व्यापक धरातल प्रदान किया। उनकी दृष्टि में राजा भी पक्षपात रहित, न्यायाचरण वाला, सत्यभाषणादियुक्त, ईश्वराज्ञा का पालन करने वाला हो और वह वेदों के अनुसार चलने वाला होना चाहिए। महर्षि दयानन्द के अनुसार जो कार्य या कर्म वेदानुकूल हैं वही धर्म है। वे सदैव वेदानुकुल आचरण के समर्थक रहे। महर्षि दयानन्द ने वेद के नित्यत्व और अपौरुषेयत्व से संबन्धित विचार ही व्यक्त किये हैं। उनके वेदार्थ चिन्तन में अनेक युगान्तरकारी विचार एवं धारणाएं प्रतिफलित हुई। यही वेदार्थ के संबंध में उनकी क्रान्ति है। उन्होंने वेद के अध्ययन को मनुष्य के जीवन तथा कार्य व्यवहार से जोड़ा। उन्होंने नारा दिया **'वेदों की ओर लौटो।'** उन्होंने वेद की आज्ञा के अनुसार जीवन यापन करने पर बल दिया। उन्होंने **वेद के अध्ययन का अधिकार सभी को दिया।** उन्होंने वेदों की मानववादी विचारधारा से परिचित कराया, और कहा गया है कि मनुष्यमात्र को मित्र की दृष्टि से देखो। महर्षि दयानन्द ने वेद में निहित उच्चतर नैतिक, आध्यात्मिक मूल्यों, दार्शनिक तत्वों एवं सामाजिक हित की दृष्टि से विहित विधानों से मानव जाति को परिचित कराया। महर्षि दयानन्द ने असत्य और अन्यायपूर्ण अधर्म का तीव्र खण्डन करने से कभी संकोच नहीं किया। उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' की भूमिका में तथा अनुभूमिकाओं में स्पष्ट कर दिया कि उनका मुख्य प्रयोजन **सत्य अर्थ का प्रकाश** करना है अर्थात् जो-जो सब मतों में सत्य बातें हैं, वे सब में अविरुद्ध होने से, उनको स्वीकार करके असत्य का खण्डन किया है। दयानन्द की दृष्टि से सत्य एक और धर्म एक है। **रामधारी सिंह दिनकर** ने इस विशेषता के कारण उन्हें **संन्यासी योद्धा** कहा था।

महर्षि दयानन्द ने **दूसरी क्रान्ति सामाजिक क्षेत्र में** की। महर्षि दयानन्द ने देखा था कि भारतीय समाज में जातिगत विषमतायें व्याप्त हैं, निम्न जातियों पर अत्याचार हो रहा है। नारियों का शोषण किया जा रहा है, उन्हें वेद के अध्ययन से वंचित रखा जा रहा है। दयानन्द ने यजुर्वेद के **मंत्र-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य'** के आधार पर कहा कि वेद के पठन-पाठन का अधिकार सभी को है। यहाँ कोई छोटा-बड़ा नहीं है। यहाँ सभी समान हैं। जाति, मत, सम्प्रदाय, भाषा, क्षेत्र, लिंग, आदि के आधार पर विषमता सामाजिक एकता के लिए अभिशाप है। उन्होंने अछूतों तथा दलितों को समानता का अधिकार दिलाने का मंगल प्रयास भी किया।

महर्षि दयानन्द की **तीसरी क्रान्ति राष्ट्रीयता के क्षेत्र** में है। स्वराज्य की अवधारणा देने वालों में वे पहले महापुरुष थे। उन्होंने भारतीयों की सोई हुई 'अस्मिता' को जगाया-'और कहा कि **'कोई कितना भी करे जो स्वदेशी राज्य होता है, वही सर्वोपरि उत्तम होता''।** महर्षि दयानन्द के राजनैतिक विचार पूर्णतः मौलिक हैं। सत्यार्थ प्रकाश में अभिव्यक्त उनके विचार राष्ट्रीयता से ऊपर उठकर भूमण्डलीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाते हैं। **'यत्र विश्वं भवति एकनीडम्'** तथा **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** उनका आदर्श हैं। उन्होंने वेद के आधार पर यह बात कही है कि-

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्मयज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।।
-(अथर्व० १२/१/९)

अर्थात्-(सत्यं बृहत्) सत्य पालन करने का ऊँचा आदर्श, **(ऋतम्)** सृष्टि संचालन के नियमों का दृढ़ता से पालन, **(उग्रं तपः)** कठोर तप-परिश्रम से, उद्यमी जीवन शैली से **(दीक्षा)** बाल्यकाल की शिक्षा से शुभकार्यों के प्रति प्रवृत्ति, **(ब्रह्म)** वेदाध्ययन, **(यज्ञः)** अग्निष्टोमादि यज्ञ और त्याग भावना अर्थात् पर्यावरण की सुरक्षा, **(पृथिवीं धारयन्ति)** ये सब तत्त्व पृथिवी को धारण करते हैं अर्थात् भूमि पर प्राकृतिक आपदाओं को दूर रखते हैं। **(भूतस्य भव्यस्य पत्नी)** हमारे भूत और भविष्य का निर्माण करने वाले व्यवहार से समस्त जनों को पालन करने वाली **(सा पृथिवी)** वह पृथिवी, **(नः उरुं लोकं कृणोतु)** हम सब जनों के निवासादि के लिए विस्तृत स्थान प्रदान करे। इस प्रकार शिक्षा दीक्षा, तप, यज्ञ और ब्रह्म ये सब राष्ट्र के धारक तत्व हैं।

महर्षि दयानन्द की **चौथी क्रान्ति आर्थिक क्षेत्र में है।** उन्होंने इस तथ्य को जान लिया था कि भारत कृषि प्रधान देश है। धन-धान्य से बाहुल्य देश ही आगे बढ़ सकता है। उन्होंने किसान को **'राजाओं का राजा'** कहा था। उन्होंने **'गो करुणा निधि'** नामक पुस्तक के माध्यम से अपनी आर्थिक योजना भी प्रस्तुत की थी। 'महर्षि दयानन्द ने धार्मिक आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा आर्थिक इन सभी क्षेत्रों में क्रान्तिकारी कार्यक्रम दिये थे। उन्होंने सामाजिक समानता के लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली दी थी, जो सभी को एकता के सूत्र में बाँध सकती थी। उनका ध्येय था- **'संसार का उपकार करना, आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।'**

महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सितम्बर सन् १८५६ से लेकर गुरुवर दण्डी स्वामी विरजानन्द महाराज की कुटिया पर (मथुरा) पहुँचने तक अर्थात् नवम्बर सन् १८६० ई० तक विभिन्न पर्वतीय वन, अरण्य व मैदानों में साधु-संन्यासियों

(शेष पृष्ठ 6 पर)

ईश्वर स्तुति

ले.-श्री नरेन्द्र आहूजा

ईश्वर की स्तुति क्यों और कैसे की जाए तथा ईश्वर स्तुति के क्या लाभ हैं यदि इस बात को हम जानकर मान लेंगे तो निश्चित रूप से सही ढंग से ईश्वर की स्तुति कर पायेंगे और उसका वांछित लाभ भी हमें होगा। आजकल प्रशंसा को ही स्तुति का पर्यायवाची मान लिया गया है। हमें कभी किसी से सहायता मांगनी होती है तो हम उसको झूठी सच्ची तारीफ यह सोचकर करना शुरू कर देते हैं कि सामने वाला व्यक्ति अपनी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न हो जाएगा और हमारी सहायता करेगा। अक्सर ऐसा होता है कि हम अपनी झूठी प्रशंसा सुनकर फूले नहीं समाते और प्रशंसा करने वाले को अपना मित्र या अनुगामी जानकर उसकी सहायता करने को तत्पर हो जाते हैं। परन्तु हम यह भूल जाते हैं कि झूठी सच्ची प्रशंसा करने वाला व्यक्ति अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु ऐसा कर रहा है।

क्या परमपिता परमेश्वर मनुष्यों द्वारा अपना स्तुतिगान करवाना चाहते हैं? क्या ईश्वर स्तुति करने से प्रसन्न होते हैं ? इन प्रश्नों का उत्तर खोजने से पूर्व हमें स्तुति के सही अर्थ को समझना होगा। आर्योद्देश्यरत्नमाला में देव दयानन्द ने स्तुति को परिभाषित करते हुए लिखा है जो ईश्वर या किसी दूसरे पदार्थ के गुण ज्ञान कथन श्रवण और यथारूप सत्य भाषण करना है वह स्तुति कहलाती है। इस व्यापक परिभाषा को जानने के उपरान्त हम आसानी से समझ सकते हैं कि किसी की झूठी व अन्यथा प्रशंसा करना उसकी स्तुति नहीं कहलाती अपितु निन्दा की श्रेणी में आती है। यदि हम अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु किसी दुराचारी, कामी, क्रोधी, लोभी व्यक्ति की प्रशंसा उसमें गुण बताकर करते हैं तो यह मिथ्याभाषण अथवा उसकी निन्दा करना हुआ। इसी प्रकार यदि हम किसी की आलोचना करने के उद्देश्य से उसके गुणों के स्थान पर उस पर दोषारोपण करते हैं तो वह भी निन्दा कहलाती है। गुणों के स्थान पर दोषारोपण या दोषों में गुणों का बखान निन्दा की श्रेणी में आता है। यदि हम किसी वस्तु के गुण कर्म स्वभाव का यथारूप वर्णन व उस बारे सत्यभाषण करते हैं तो वह उसकी स्तुति कहलाती है अर्थात डाकू को डाकू कहना, ज्ञानी को ज्ञानी बतलाना स्तुति की श्रेणी में आता है।

अब प्रश्न उठता है कि हम ईश्वर की स्तुति किस प्रकार कर सकते हैं ? ईश्वर की स्तुति करने से पूर्व ईश्वर के सच्चे स्वरूप का ज्ञान होना तथा उनके सच्चे स्वरूप को जानना व मानना अत्यन्त आवश्यक है। परमपिता परमेश्वर सर्वव्यापी है, ईश्वर के सर्वव्यापी होने का प्रमाण ईश्वर द्वारा समस्त सृष्टि का निर्माण, पालन, न्याय व संहार से सिद्ध हो जाता है। ईश्वर सृष्टि का पालन कर रहे हैं, ऐसा वह तभी कर सकते हैं जब कर्त्ता होने के कारण सृष्टि के कण-कण में स्वयं विद्यमान है। ईश्वर न्यायकर्ता है न्याय करने के लिए प्रत्येक प्राणी के प्रत्येक कर्म का दृष्टा रूप में ज्ञान होना आवश्यक है और चूंकि अनादि अनन्त ईश्वर सृष्टि में सर्वत्र विद्यमान है इसीलिए प्रत्येक प्राणी के प्रत्येक कार्य का पूरा यथावत ज्ञान परमपिता परमेश्वर को है। यदि ऐसे सर्वव्यापी परमेश्वर को हम किसी स्थान विशेष में या किसी जड़ मूर्ति में सीमित मान लें और उसी जड़ पदार्थ की पूजा अर्चना प्रारम्भ कर दें तो यह मिथ्या होने के कारण सर्वव्यापी ईश्वर की निन्दा करना हुआ। परमपिता परमेश्वर सर्वशक्तिमान है लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि हम अकर्मण्य होकर बिना पुरुषार्थ किए ईश्वर की स्तुति प्रार्थना करके अपने कार्यों के लिए भी ईश्वर को ही उत्तरदायी मानने लगें तो यह भी मिथ्या होने के कारण सर्वशक्तिमान प्रभु की निन्दा करना हुआ। यहां ईश्वर के सर्वशक्तिमान कहने का अभिप्राय यह है कि परमपिता परमेश्वर को अपने कार्यों सृष्टि के निर्माण, पालन, न्याय तथा संहार करने के लिए किसी साधना व सहायता की आवश्यकता नहीं होती। मनुष्य मननशील विचारशील प्राणी होने के कारण ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानकर उसके गुण कर्म स्वभाव का वर्णन करते हुए ईश्वर की स्तुति कर सकता है।

परन्तु फिर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि हम ईश्वर की स्तुति क्यों करें? क्या ईश्वर हमारे द्वारा अपनी स्तुति का भूखा है ? ईश्वर की स्तुति करना मनुष्य मात्र का कर्त्तव्य है। प्यासे व्यक्ति को यदि कोई एक लोटा शीतल जल पिला दे तो अनायास ही उसके मुख से उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन व धन्यवाद के शब्द निकलते हैं। यदि भूखे व्यक्ति को कोई भोजन देकर तृप्त कर दे तो वह भी देने वाले को आशीष देते हुए धन्यवाद करता है। तो क्या प्राणी मात्र के उपभोग के लिए नि:स्वार्थ भाव से परमपिता परमेश्वर द्वारा प्रदत्त समस्त प्रकृति के धन ऐश्वर्यों का उपयोग या दोहन करते समय उस ईश्वर महान के प्रति स्तुति करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित करना हम मनुष्यों का दायित्व नहीं बनता? यदि हम ऐसा नहीं करते तो निश्चित रूप से कृतघ्नता दोष के भागी बनते हैं। लेकिन प्रश्न अभी भी आधा अनुत्तरित है। ईश्वर न्यायकारी होने के कारण हमारे स्तुति करने मात्र से पक्षपाती होकर अपनी न्याय व्यवस्था को भंग तो नहीं करेगा?

मनुष्य ईश्वर की सच्ची स्तुति तभी कर सकता है जब वह ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव सत्यस्वरूप का यशोगान करते हुए उन गुणों को न्यूनाधिक रूप से अपने जीवन में समाहित करने का प्रयास करे। ईश्वर की स्तुति करते समय यदि हमने ईश्वर को सृष्टि का निर्माता पालनकर्ता न्यायकारी दयालु बतलाया तो क्या कभी उस शाब्दिक स्तुति के उपरांत उसे कार्य रूप देते हुए कुछ सार्थक निर्माण किया या किसी निर्बल धर्मात्मा को सरंक्षण देकर उसका पालन किया या दीन दुखियों पर अपनी दयालुता दिखाई या जीवन में सही न्याय किया। यदि हम ऐसा कर पाये तभी हमने ईश्वर की स्तुति की अन्यथा हमारी स्तुति या सारा दिन बजने वाला टेपरिकार्ड में कोई अन्तर नहीं है। टेपरिकार्ड में भी पूरा दिन गायत्री मंत्र बजता है परन्तु उस गायत्री पुनश्चरण का लाभ उस जड़ पदार्थ को कभी नहीं मिलता। ठीक उसी प्रकार मनुष्य बिना ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव को अपने जीवन में धारण किए केवल कण्ठ से उच्चारण करे तो उसका कोई लाभ मिलने वाला नहीं है। और यदि इन गुण कर्म स्वभाव को अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करते हुए हम ईश्वर की स्तुति करते हैं तो इसके बहुत से लाभ हमें जल्द ही अनुभव होने लगते हैं।

स्तुति के लाभ में ईश्वरीय गुणों का बारम्बार बखान करने से स्तोता में अर्थात् स्तुति करने वाले की आत्मा में आर्द्रता अर्थात् आत्मा में विराजमान परमात्मा की प्रेरणा सुनने मानने की इच्छा उत्पन्न होती है। दूसरों के गुणों का बखान करने से अपने मन में अहंकार की भावना समाप्त हो जाती है। अहंकार के नाश के साथ कई गुणों का जीवन में समावेश और विकास होता है जिनमें नम्रता, धैर्य आदि प्रमुख हैं। आत्मा की आर्द्रता, अहंकार के नाश के साथ ही स्तुति करने से मनुष्य के मन में उन गुणों की ग्राह्यता बढ़ती है और उन समान गुणों के ग्रहण करने से ईश्वर के प्रति अत्यंत प्रीति का भाव भी जागृत होता है।

स्तुति को दो भागों में विभाजित किया गया है-

1. सगुण स्तुति : ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव का यथारूप वर्णन सत्यभाषण और उन्हीं गुणों का अपने जीवन में समावेश करने का प्रयास करते हुए ईश्वर के प्रति प्रीति का बढ़ना सगुण स्तुति कहलाता है।

2. निर्गुण स्तुति : परमपिता परमेश्वर शब्द, स्पर्श, रंग, रूप, गंध, आकार आदि से रहित है। ऐसा मानना ईश्वर की निर्गुण स्तुति करना कहलाता है और इसके विपरीत यदि हम ईश्वर को किसी आकार, शब्द, स्पर्श, रंग, रूप या गंध से युक्त अर्थात साकार मानें तो यह ईश्वर की निन्दा कहलाती है।

पृष्ठ 4 का शेष-समग्र क्रान्ति के प्रणेता...

के साथ भ्रमण करते हुये वे सच्चे शिव की तलाश में लगे रहे। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में लिखा है-''कोई कितना ही करें, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।'' इससे प्रतीत होता है कि स्वामी दयानन्द के अर्न्तमन में अँग्रेजी शासन के विरुद्ध और स्वदेशीय राज्य स्थापना की अग्नि भीतर ही भीतर धधक रही थी। वे अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए जन-जाग्रति के अभियान में संलग्न थे, इसीलिए सन् १८५५ में स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से कनखल (हरिद्वार) में संन्यास-दीक्षा लेने के उपरान्त स्वतन्त्रता-संग्राम की तैयारी में लगे रहे। इस सम्भावना को सर्वप्रथम 'हमारा राजस्थान' के लेखक श्री पृथ्वीसिंह मेहता ने स्वीकारा है और पं० सत्यकेतु ने इसकी पुष्टि भी की है। एक ओर गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द राजा, महाराजाओं और ज़मीदारों में स्वदेशी राज्य की स्थापनार्थ जागृति उत्पन्न कर रहे थे तो दूसरी ओर अँग्रेजी शासन से त्रस्त अपने देश के जनमानस में, स्वतन्त्रता हेतु, क्रान्ति की अग्नि प्रज्वलन करने का कार्य स्वामी दयानन्द कर रहे थे। साधु-संन्यासियों और सामान्यजन के मध्य पहुँचकर स्वामी दयानन्द ने प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम हेतु अद्भुत एवं परोक्ष रूपेण अपनी भूमिका का निर्वहण किया था। यही कारण है कि सन् १८५७ ई० में राष्ट्र का स्वाभिमान जागृत हुआ। कई प्रान्तों में क्रान्ति की पवित्र-अग्नि धधक उठी। मेरठ के आसपास के लोगों ने इतिहास में अपना नाम अमर कर लिया। कुछ देशी रियासतों के सत्ता-लोलुप राजा-महाराजाओं एवं स्वार्थी-गद्दारों के कारण यह क्रान्ति सफल नहीं हो पाई। इस प्रथम क्रान्ति के परिणाम स्वरूप भारत देश का प्रशासन ईष्ट इण्डिया कम्पनी से छीनकर इंग्लैण्ड की तत्कालीन महारानी विस्टोरिया ने अपने अधीन कर लिया और महारानी ने इस क्रान्ति के कारणों पर विचार करते हुए, ''भारतीयों के धर्म में किसी प्रकार हस्तक्षेप न करने की घोषणा की।'' इसके बाद लार्ड केनिंग को भारत का गर्वनर जनरल नियुक्त किया गया, जो बाद में ब्रिटिश-भारत के वायसराय बना।

उपर्युक्त अति-संक्षिप्त किन्तु महत्वपूर्ण विवरण से सहज-अनुमान लगाया जा सकता है कि सन् १८५५ ई० से नवम्बर १८६० (गुरुवर के सान्निध्य में आने तक) स्वामी दयानन्द अपने देश की स्वतन्त्रता हेतु परोक्ष रूप से संलग्न थे और वेदविद्या, योग-विद्या व आर्ष-ग्रन्थों के अध्ययन हेतु 'सच्चे गुरु' की खोज भी साथ ही साथ कर रहे थे।

पृष्ठ 1 का शेष-आर्य समाज के सिद्धान्तों को क्रियान्वित...

परन्तु फिर भी जिस रूप में आर्य समाज का प्रचार होना चाहिए था वह नहीं हो पा रहा है। जिस अन्धविश्वास को मिटाने का बीड़ आर्य समाज ने उठाया था, वही अन्धविश्वास और पाखण्ड़ समाज को अपने पंजों में जकड़ रहा है। महर्षि दयानन्द ने किसी भी मनुष्य की विचारधारा को जनता के सामने नहीं रखा, वह जानते थे कि मनुष्य अपने आप में चाहे कितना ही उच्चकोटि का हो, उसमें कोई न कोई कमी तो रह ही जाती है। इसलिए उन्होंने कहा कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। यह किसी मनुष्य के लिखे हुए नहीं हैं, ये सारी मानव जाति के लिए हैं। जब वेदों का प्रकाश हुआ था, उस समय संसार में मानव के सिवाय कोई जाति नहीं थी। इसलिए वेद का ज्ञान भी सम्पूर्ण मानव जाति के लिए दिया था।

22 मार्च 2023 को विक्रमी नव संवत् व आर्य समाज स्थापना दिवस मनाते हुए हम वर्तमान परिस्थितियों पर चिन्तन करते हुए आर्य समाज को फिर से नई दिशा देने के लिए कार्य करें। सभी आर्य बन्धु आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चलते हुए, संगठन को सुदृढ़ता प्रदान करते हुए वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार पर बल दें। यह दिवस हमारे लिए आत्मचिन्तन का अवसर है। इस अवसर पर हमें चिन्तन करना चाहिए कि वर्तमान में आर्य समाज के सामने जो चुनौतियां है उन चुनौतियों का सामना कैसे करें। आर्य समाज के सिद्धान्तों और मन्तव्यों का, वेद की शिक्षाओं का जन-जन में किस प्रकार प्रचार और प्रसार हो? इस पर विचार करते हुए अगर हम आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करेंगे तो आर्य समाज का लक्ष्य पूर्ण होगा।

पावन पर्व होली

पं.-नंदलाल निर्भय

पावन होली त्यौहार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।
देवों के सद्व्यवहार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।।
आर्यों का है यह त्यौहार। हमको होली से है प्यार।।
ऋषियों के उच्च विचार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।
पावन होली त्यौहार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।।१।।

होली नव सस्येष्टि यज्ञ, कहते हैं वैदिक मर्मज्ञ।।
यदि हित चाहो संसार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।
पावन होली त्यौहार का, लो महत्व समझ नर-नारी।।२।।

रबी की फसल पूर्ण पक जाती। जनता भारी हर्ष मनाती।।
अवसर है खुशी अपार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।।
पावन होली त्यौहार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।।३।।

आर्यदेव यज्ञ करते थे। जग के कष्ट सभी हरते थे।।
यह पर्व है परोपकार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।।४।।

लागू थे तब वैदिक नैम। या सर्वत्र परस्पर प्रेम।।
था लक्ष्य विश्व उद्धार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।
पावन होली त्यौहार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।।५।।

तज दो सभी ईर्ष्या द्वेष। परहित सोचो सभी हमेश।।
यह जगत बाग करतार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।
पावन होली त्यौहार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।।६।।

छोडो चोरी, जुआ, शराब, तज दो आदत सभी खराब।।
रंग डालो सब पर प्यार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।
पावन होली त्यौहार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।।७।।

गंदी प्रथाओं को तोड़ो, सच्चाई से रिश्ता जोड़ो।।
जीवन जीओं सत्कार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।
पावन होली त्यौहार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।।८।।

अब तक होली हूँ जो होली, सबसे बोलो मीठी बोली।।
फल पाओ प्रेमोपहार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।
पावन होली त्यौहार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।।९।।

ऋषियों की शिक्षाएँ मानो, अपना भला-बुरा पहचानो।।
यह वक्त नहीं तकरार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।
पावन होली त्यौहार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।।१०।।

सर्वोत्तम है मानव चोला, सारे चोलों में अनमोला।।
कुछ भला करो संसार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।
पावन होली त्यौहार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।।११।।

कहता नंदलाल कर जोड़, खोटे कर्मों को दो छोड़।।
यह समय वेद प्रचार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।
पावन होली त्यौहार का, लो महत्त्व समझ नर-नारी।।१२।।

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा। -**व्यवस्थापक आर्य मर्यादा**

पृष्ठ 2 का शेष-वैदिक अथर्ववेद में पृथ्वी सूक्त

(अश्वेषु) घोड़ों में है। सूर्य से भी पृथ्वी को ताप मिलता है साथ ही वायु जल और अन्न को शुद्ध करता है।

अग्निर्दिव आतपत्यग्नेर्दवस्योर्वे अंतरिक्षम्।

अग्निमर्तास इंधते हव्यावाहं घृतं प्रियम्।।20।।

पदार्थ-अग्नि सूर्य से प्राप्त होकर तपता है। कामना योग्य अग्नि का चौड़ा अंतरिक्ष है। हव्य को ले चलने वाले, नदियों में अन्न का रस ले चलने वाले, घृत को चाहने वाले अग्नि को मनुष्य लोग प्रकाशमान करते हैं।

गंधवती पृथ्वी का आश्रय लेकर अनेक प्रकार के प्राणी और सब लोक आकार धारण करके ठहरते है।

य्स्तेगंधः पृथिवी संबभू वयं ब्रिभ्रत्योषधयो समापः।

ये गंधर्वाअप्सरसच्च मेजि रे तेन मा सुरभिं कृणु मानो द्विक्षत कश्चन।।23।।

पदार्थ-हे पृथ्वी जो तेरा गंध उत्पन्न हुआ है। जिस अंश को औषधियां और जिनको जल धारण करते है। जिसको पृथ्वी को धारण करने वाले प्राणियों ने और आकाश में चलने वाले जीवों के भोग है उस गंध से मुझे ऐश्वर्यवान तू कर। हमसे कोई भी प्राणी शत्रुता न करें।

पृथ्वी वास्तव में शिला पत्थर नाना धातुएं और धूल ही तो है।

शिला भूमिरश्मा पांसुः सा भूमिः संधृता धृता।

तस्यै हिरण्यवक्षसे पृथिव्या अकरं नमः।।26।।

पदार्थ-(भूमिः) भूमि (शिला) शिला (अश्मा) पत्थर ओर (पांसुः) धूलि हैं। (सा) वह (संधृता) यथावत् धारण की गई (भूमिः) भूमि (धृत्ता) धरी हुई है। (तस्यै) उस (हिरण्यवक्षसे) स्वर्ण आदि धन छाती में रखने वाली (पृथिव्यै) पृथ्वी के लिये (नम् अकरम्) मैंने अन्न खाया है।

पृथ्वी पर हमारे उपकार के लिये नाना प्रकार के फल फूल उत्पन्न होते हैं।

यस्यां वृक्षा वानस्पत्या धृवास्तिष्ठन्ति विश्वहा।

पृथ्वी विश्वधायसं धृतामच्छावदामसि।।27।।

पदार्थ-जिस पृथ्वी पर वनस्पतियों से उत्पन्न हुए वृक्ष दृढ़ होकर अनेक प्रकार से ठहरते है। उन सबकी धारण करने वाली वीरों से धारण की गई पृथ्वी का स्वागत करके हम आह्वान करते हैं। हम पृथ्वी से औषधियां खोदे तो इस बात का ध्यान रखे कि इतनी ही खोदे कि जिसमें औषधियां फिर अंकुरित हो जाए।

यत् ते भूमे विखनामि तदपि रोहतु।

माते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्।।35।।

पदार्थ-हे भूमि मैं तेरा जो कुछ भाग खोद डालू वह शीघ्र ही उग जाए। हे खोजने योग्य ना तो तेरे मर्म स्थल की ओर न तेरे हृदय की मैं हानि करूं।

मंत्र संख्या 39 में कहा गया है कि जिस भूमि पर अपने शरीर की इन्द्रियों द्वारा वेद ज्ञान प्राप्त करके ऋषि लोग आत्मोन्नति करते है। उस भूमि पर हम पुरूषार्थ करके सुख प्राप्त करें। इस पृथ्वी पर ही मनुष्य नाना प्रकार से आनंद मानते हैं। नाचते हैं गाना गाते हैं। और कभी युद्ध भी करते हैं।

यस्यां गायन्ति नृत्यन्ति भूम्यां मर्त्या ब्यैलवाः।

सुध्यन्ते यस्यामाक्रन्दो यस्यांवदति दुंदुभिः।

सा नो भूमिः प्रणुदतां सपत्ना सपत्नं मा पृथिवी कुणोतु।।41।।

पदार्थ-(यस्यां भूम्याम्) जिस भूमि पर (ब्यैलवाः) विविध प्रकार की वाणियों को बोलने वाले (मर्त्या) मनुष्य (गायन्ति) गीत गाते है और (नृत्यन्ति) नाचते है। (यस्या भूम्याम्) जिस भूमि पर कोलाहल करने वाले योद्धा (युध्यन्ते) युद्ध करते हैं। (सा भूमि) वह भूमि (नः) हमारे (सपन्नान) शत्रुओं को (प्रणदातम्) शत्रुरहित (कृणोतु) कर देवे।

विद्वान मनुष्य पृथ्वी की खोज करते रहते हैं और वे खानों से अनेक रत्न स्वर्ण आदि प्राप्त करते हैं।

निधिं भ्रिती बहुधागुहा वसु मणिं हिरण्यं पृथिवी ददातु मे।

वसुनि नो वसुदा रासमाना देवी दधातु सुमनस्यमाना।।44।।

पदार्थ-(गुहा) अपने गुहा में (गढ़े में) (निधिम्) निधि (धन का कोश) (बहुधा) अनेक प्रकार (बिभ्रति) रखती हुई (पृथिवी) पृथ्वी (मे) मुझे (वसु) धन (मणिम्) मणियां और (हिरण्यम्) स्वर्ण (ददातु) देवे। (वसुदाः) धन प्रदान करने वाली (वसूनि) धनो को (रासमाना) देती हुई (देवी) यह देवी (सुमनस्यमाना) प्रसन्न मन होकर (नः दधातु) हमारा पोषण करे।

पृथ्वी पर विषैले जीव जंतु भी रहते हैं। उनसे मनुष्य सावधान रहे-

यस्ते सर्पो वृश्चिकस्तृष्टदंश्मा हेमन्तजब्धो भ्रमले गुहाशये।

क्रिमिर्जिन्वत् पृथिवी यद्यदेजति प्रावृषि तन्नः सर्पन्मो सुपद् यच्छिवं तेन नो मृद।।46।।

पदार्थ-(यः) जो (तुष्टदंश्मा) डंक मारने से प्यास उत्पन्न करने वाला (सर्पः) सांप (वा) (वृश्चिकः) बिच्छू (हेमन्तजब्धः) ठण्डे से ठिठुरा हुआ (भ्रमलः) घबडाता हुआ (ते) तेरे (गुहा) गढ़े में (शये) सोता है। (क्रिमिः) जो कीड़ा और (यद्यत्) जो जो (प्रावृषि) वर्षा ऋतु में (जिन्वत्) रेंगता हुआ (नः) हम पर (मा उप सृपत) आकर रेंगे (यत्) जो कुछ (शिवम्) मंगल दायक है (तेन) उससे (नः) हमें (मृड) सुख दे।

पृथ्वी पर जंगलों नाना प्रकार के जंगली प्राणी पाये जाते हैं। मनुष्यों को चाहिए कि उनमें हितकारी पशुओं की रक्षा करे तथा हिंसक पशुओं को मारता रहे।

ये त आरण्याः पशववो मृगा वनेहिताः सिंहा व्याध्रा पुरूषादश्चरन्ति।

उलं वृकं पृथिवी दुच्छुनाभित ऋक्षीकां रक्षो अपबाधयास्मत्।।49।।

पदार्थ-(ये ते) जो वे (आरण्याः) वन में उत्पन्न हुए (पशवः) पशु (हिताः) हितकारी (मृगाः) हिरण आदि ओर (पुरूषादः) मनुष्यों को खाने वाले (सिंहाः) सिंह और (व्याध्राः) सूंध कर मारने वाले बाघ आदि (वने) वन के बीच (चरन्ति) चरते फिरते हैं। उनमें से (पृथिवी) हे पृथ्वी (उलम्) वनबिलाव (वृकम्) भेड़िया और (दुच्छुनाम्) दुष्ट गति वाली (ऋषीकाम्) हिंसक रींछड़ी आदि (रक्षः) राक्षस (दृष्टिजीवों) को (इतः) यहां पर (अस्मत्) हम से (अपबाध्य) हटा दें।

जंगलों में चोर डाकू आदि भी रहते हैं जो पथिकों को लूट लेते हैं।

ये गंधर्वा अप्सरसो ये चारायाः क्रिमीदिनः।

पिशाचान्त्सर्वा रक्षांसि तानस्मद् भूमे यावय।।50।।

पदार्थ-(ये) जो (गंधर्वाः) दुखदायी हिंसक (अप्सरसः) विरूद्ध चलने वाले (च) और (ये) जो (अरायाः) कंजूस (क्रिमीदिनः) लुतरे पुरूष है। (भूमे) हे भूमि (तान्) उन (पिशाचान्) पिशाचो को और (सर्वा) सब (रक्षांसि) राक्षसों को (अस्मत्) हम से (यावत्) अलग रख।

मनुष्य पशु पक्षियों वायु मेघ आदि के ज्ञान से लाभ उठावें।

यां द्विपादः पक्षिणः संपतन्ति हंसाः सुपर्णाः शकुना वयांसि।

यस्या वातो मातरिश्वेयते रजांसि कृण्वेश्च्यावयंश्च वृक्षान्।

वातस्य प्रवामुंयवामनुवात्यर्चिः।।51।।

पदार्थ-(याम्) जिस भूमि पर (द्विपादः) दो पैर वाले (पक्षिणः) पक्षी (हंसा) हंस (सुपार्णाः) बड़े उड़ने वाले (गरूड आदि) (शकुनाः) शक्ति वाले (गिद्ध चील आदि) (वयांसि) पक्षी गण (संपतन्ति) उड़ते रहते हैं। (यस्याम्) जिस भूमि पर (मातरिश्वा) आकाश में चलने वाले (वातः) वायु (रजांसि) जल से भरे बादलों को (कृण्वन्) बनाता हुआ (च) और (वृक्षान्) वृक्षोंपों को (च्यावयन्) हिलाता हुआ (ईयते) चलता है और (अर्चिः) प्रकाश (वातस्य) वायु के (प्रवाम्) फैलाव और (उपवास अनु) संकोच के साथ साथ (वाति) चलता है।

मनुष्यों को उचित है कि सब स्थानों सब अवस्थाओं और राज्यसभा धर्मसभा आदि में भूमि के गुणों को जानकर देश भक्त बने।

ये ग्रामा यदरण्यं याः सभा अधि भूम्याम्।

ये संग्रामाः समित यस्तेषु चारू वदेम ते।।56।।

पदार्थ-(ये ग्रामाः) जो गांव (यत् अरण्यम्) जो वन (याः सभाः) जो सभाएं (भूम्याम् अधि) भूमि पर हैं। (ये संग्रामाः) जो संग्राम ओर (समितयः) समितिएं हैं (तेषु) उन सब में (ते) तेरा (चारू) सुंदर यश (वदेम) हम कहें।

मनुष्य प्रयन्त कर पृथ्वी पर स्वस्थ रह कर धर्म का पालन करें।

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं संतु पृथिवी प्रसूताः।

दीर्घं न आयुः प्रति बुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम्।।62।।

पदार्थ-(पृथिवी) हे पृथ्वी (ते) तेरी (उपस्थाः) गोदें (अस्मभ्यम्) हमारे लिए (अनमिवाः) नीरोग ओर (अयक्ष्माः) राजरोग रहित (प्रसूताः) उत्पन्न (संतु) होवें। (नः) अपने (आयुः) आयु को (दीर्घम्) दीर्घ काल तक (प्रतिबुध्यमाना) जगाते हुए (वयम्) हम (तुभ्यम्) तेरे लिए (बलिहृतः) बलि देने वाले (स्याम्) होवें।

अब सूक्त का अंतिम मंत्र देकर विषय को विराम देते हैं।

भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।

संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम्।।63।।

पदार्थ-(भूमे मातः) हे पृथ्वी माता (मा) मुझको (भद्रया) कल्याणी मति के साथ (सुप्रतिष्ठितम्) बड़ी प्रतिष्ठा वाला (निधेहि) बनाए रख। (कवे) हे गतिशीले जो चलती है और जिस पर हम भी चलते हैं (दिवा) प्रकाश के साथ (संविदाना) मिली हुई तू (मा) तुझको (श्रियाम्) श्री सम्पति में और (भूत्याम्) ऐश्वर्य में (धेहि) धारण कर।

हमने इस भूमि के संक्षिप्त वर्णन में ही देख लिया है कि सम्पूर्ण वर्णन अत्यंत सरल शब्दों में पृथ्वी की वास्तविक स्थिति को हमारे सम्मुख रख रहा है। वर्णन साहित्यिक तो है ही साथ ही विज्ञान के अनुकूल भी है।

आर्य समाज मंदिर नवांकोट अमृतसर में ऋषि बोधोत्सव धूमधाम से मनाया

आर्य समाज मंदिर नवांकोट, अमृतसर का 74वां स्थापना दिवस एवं ऋषि बोधोत्सव पूर्व धूमधाम से मनाया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री सुदेश कुमार जी विशेष रूप से इस कार्यक्रम में पधारे। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री सुदेश कुमार जी मंच पर बैठे हुये जबकि उनके साथ बैठे हैं आर्य समाज भार्गव नगर जालन्धर के प्रधान श्री कमल किशोर जी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय कुमार जी शास्त्री एवं आर्य समाज नवांकोट अमृतसर के मंत्री श्री बाल कृष्ण एडवोकेट। जबकि चित्र दो में महिला सदस्यों को सम्मानित करते हुये आर्य समाज के सदस्य।

आर्य समाज मंदिर नवांकोट अमृतसर का 74वां स्थापना दिवस एवं ऋषि बोधोत्सव पर्व दिनांक 26 फरवरी 2023 को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम प्रात: 9.00 बजे से 10.30 बजे तक हवन यज्ञ में पंडित विजय कुमार शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में वेद मंत्रों के साथ आहुतियां दी गई। हवन यज्ञ के पश्चात अपने प्रवचन में श्री विजय शास्त्री जी ने हवन यज्ञ के लाभ तथा घर घर में हवन यज्ञ करने की प्रेरणा दी। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं एवं जीवन पर प्रकाश डाला। इस के पश्चात मुख्य कार्यक्रम प्रात: 11.00 बजे से दोपहर 2.00 बजे तक किया गया जिसमें सर्वप्रथम भजनों का कार्यक्रम और विद्वानों के उपदेश हुये। सर्वप्रथम पंडित हेमराज शास्त्री, श्री दिनेश जी के बेटे श्री विवेक पथिक एवं बेटी शिवानी आर्य ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर बहुत सुन्दर सुन्दर भजन प्रस्तुत किये। भजनों के बाद श्री विजय कुमार जी शास्त्री का प्रवचन हुआ जिसमें उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि शिवरात्रि पर बालक मूल शंकर के हृदय में एक विशेष प्रकार की ज्योति जगी जिसने उसे यह सोचने पर विवश कर दिया कि यह सच्चा शिव नहीं है? पुजारी को जगाना चाहा परन्तु वह तो गहरी निन्द्रा में लीन था, उठा ही नहीं। पिता को जगाया और पूछा कि पिता जी क्या यही सच्चा शिव है? जिस पर वह चूहे उछल कूद कर रहे हैं। पिता ने कहा कि बेटे यह तो उसकी मूर्ति है। असली शिव तो कैलाश पर्वत पर रहता है लेकिन पिता के उत्तर से बालक मूलशंकर संतुष्ट नहीं हुआ। मूलशंकर शिव मंदिर से उठ कर घर चला गया और माता जी से लेकर भोजन किया परन्तु मूल शंकर के पिता श्री कर्षन जी तिवारी वहीं सोते रहे। मूलशंकर इस घटना के बाद कभी चैन की नींद नहीं सो सका। वह इस रात ऐसा जागा कि फिर जीवन भर जागता ही रहा और लोगों को जगाता रहा। इस रात्रि ने संसार को दयानन्द जैसा चिन्तक, विचारक दिया जिसने यह सिद्ध कर दिखाया कि मूर्ति जड़ होती है और इस मूर्ति पूजा से भारत का बहुत बड़ा अहित हुआ है। उसने परमात्मा की सर्वव्यापकता सिद्ध करके उसका सच्चा स्वरूप संसार के लोगों के सामने रखा और बताया कि वेद में स्पष्ट कहा गया है कि न तस्य प्रतिमा अस्ति अर्थात उसकी कोई प्रतिमा नहीं बन सकती। वह नस नाडियों के बंधन से बाहर है। उसको आंखों से नहीं देखा जा सकता। उसे जानने के लिये मन की आंखें खोलनी होंगी उसे सिर्फ और सिर्फ अनुभव किया जा सकता है। इस अवसर पर अमृतसर के विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित हुये। आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर, आर्य समाज माडल टाउन अमृतसर, आर्य समाज मंदिर पुतलीघर अमृतसर, आर्य समाज मंदिर बाजार श्रद्धानंद अमृतसर, आर्य समाज लारेंस रोड अमृतसर, केन्द्रीय आर्य सभा से श्री राकेश मेहरा जी विशेष रूप से पधारे। यह सारा कार्यक्रम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री सुदेश कुमार जी की अध्यक्षता में हुआ। कार्यक्रम के आखिर में उन्होंने अपने सम्बोधन में उपस्थित आर्य समाजों के प्रतिनिधियों एवं कार्यक्रम की भूरि भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से हमें अनेकों शिक्षाएं प्राप्त होती हैं। उस महामानव का जीवन एक ज्योति पुंज के समान है जो अपने चारों ओर ज्ञान प्रकाश की किरणें बिखेरता हुआ जन मानस को आलौकित कर रहा है। जब जब जिस जिस ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जीवन को ध्यान से देखा वह उनका होकर रह गया। स्वामी जी का प्रत्येक ग्रंथ ज्ञान का भंडार है। केवल सत्यार्थ प्रकाश ही को अगर हम लेते तो हमें पता चलता है कि उन्होंने इस ग्रंथ का नाम भी बड़ा चुन कर रखा है। महर्षि सारे संसार में सत्य का प्रकाश करना चाहते थे। शांति पाठ के पश्चात कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अंत में भव्य ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

– बालकृष्ण भगत मंत्री
आर्य समाज नवांकोट–अमृतसर

वेदवाणी

धन का सदुपयोग

पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् द्रीघीयांसमनु पश्येत पन्थाम्।
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः।।

–ऋ० १०।११८१/५

ऋषिः–**आङ्गिरसो भिक्षुः।।** देवता–**धनान्नदानप्रशंसा।।** छन्दः–**विराट्त्रिष्टुप्।।**

विनय–धन को जाते हुए कितनी देर लगती है ? व्यापार में घाटा हो सकता है, चोर–लुटेरे धन लूट ले जाते हैं, बैंक टूट जाते हैं, घर जल जाता है आदि सैंकड़ों प्रकार से लक्ष्मी मनुष्य को क्षण भर में छोड़कर चली जाती है। वास्तव में लक्ष्मीदेवी बड़ी चंचल है। वह मनुष्य कितना मूर्ख है जो यह समझता है कि बस, यदि मैं दूसरों को धन दान नहीं करूंगा तो और किसी प्रकार मेरा धन मुझसे पृथक् नहीं हो सकेगा। अरे, धन तो जब समय आएगा तो एक पलभर में तुझे कङ्गाल बनाकर कहीं चला जाएगा। इसलिए हे धनी पुरुष! यदि इस समय तेरे शुभकर्मों के भोग से तेरे पास धन–सम्पत्ति आई हुई है तो तू इसे यथोचित–दान में देने में कभी संकोच मत कर। जीवन मार्ग को तनिक विस्तृत दृष्टि से देख और सत्पात्र को दान देने में अपना कल्याण समझ, अपनी कमाई समझ। सच्चा दान करना, सचमुच जगत्पति भगवान् को उधार देना है जो बड़े भारी दिव्य सूद के साथ फिर वापस मिलता है। जो जितना त्याग करता है वह उससे न जाने कितना गुणा अधिक प्रतिफल पाता है, यह ईश्वरीय नियम है। दान तो संसार का महान् सिद्धान्त हैं, पर इस इतनी साफ बात को यदि लोग नहीं समझते हैं तो इसका कारण यह है कि वे मार्ग को दूर तक नहीं देखते। जीवन–मार्ग कितना लम्बा है, यह संसार कितना विस्तृत है और इस संसार में जीवों को उनके कब के शुभ–अशुभ कर्मों का फल उन्हें कब मिलता है, यह सब कुछ नहीं दिखाई देता। इसीलिए हमें संसार में चलते हुए वे अटल नियम भी दिखाई नहीं देते जिनके अनुसार सब मनुष्यों को उनके शुभ–अशुभ कर्मों का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है। यदि इस संसार की गति को हम तनिक भी ध्यान से देखें तो पता लगेगा कि धन–सम्पत्ति इतनी अस्थिर है कि यह रथचक्र की भांति घूमती रहती है–आज इसके पास है तो कल दूसरे के पास है, परन्तु हमें अति क्षुद्र दृष्टिवाले हैं और इसीलिए इस आज में ही इतने ग्रस्त हैं कि हम कल को देखते हुए भी नहीं देखते हैं। संसार में लोगों का नित्य धननाश होता हुए देखते हुए भी अपने धननाश के एक पल पहले तक भी हम इस घटना के लिए कभी तैयार नहीं होते और इसीलिए तनिक सा धननाश होने पर इतने रोते–चीखते भी हैं। यदि हम मार्ग को विस्तृत दृष्टि से देखें तो इन धनागमों और धननाशों को अत्यन्त तुच्छ बात समझें। यदि संसार में प्रतिक्षण चलायमान, घूमते हुए, इस धन चक्र को देखें, इस बहते हुए धन प्रवाह को देखें, तो हमें धन जमा करने का तनिक भी मोह न रहे।

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड,जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित।
सम्पादक–प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org